योग-वासिष्ठ का परिचय

(मुख्यतः "संक्षिप्त योग-वासिष्ठ", कोड 574, गीताप्रेस गोरखपुर पर आधारित)

- योग-वासिष्ठ मुख्यतः भगवान् श्रीराम को महर्षि वसिष्ठ के द्वारा दिए गए तत्त्व-ज्ञान पर आधारित है। इस विषय पर उपलब्ध संसार की यह सर्वोच्च काव्य-रचना है।
- योग-वासिष्ठ के रचयिता महर्षि वाल्मीकि जी हैं, जो विश्व के प्राचीनतम काव्य-ग्रन्थ 'रामायण' के भी रचयिता थे।

- यह ग्रन्थ 'योगवासिष्ठ महारामायण', 'महारामायण', 'आर्षरामायण', 'वासिष्ठ-रामायण', 'ज्ञान-वासिष्ठ', 'वासिष्ठ' एवं 'मोक्षोपाय' आदि विभिन्न नामों से भी जाना जाता है।
- इसमें आत्मा-परमात्मा, जीव-जगत, बन्धन-मोक्ष आदि जटिल विषयों का विभिन्न कथानकों, दृष्टान्तों, आख्यानों, उपाख्यानों तथा युक्तियों द्वारा बड़ा ही सुन्दर विवेचन किया गया है।

- तत्त्व ज्ञान की विस्तृत विवेचना के कारण योग-वासिष्ठ को उपनिषदों के समकक्ष रखा जाता है । परन्तु इसकी संस्कृत (भाषा) उपनिषदों से कम क्लिष्ट है तथा जटिल विषयों का दृष्टांतों-सहित वर्णन होने के कारण उपनिषदों की अपेक्षा इसे सममझना कम कठिन है।
- योग-वासिष्ठ ब्रह्मवाद का ग्रन्थ है, जिसके अनुसार एक मात्र चेतन-तत्त्व परब्रह्म है और इसके अतिरिक्त कोई सत्ता नहीं है। मुख्यतः ज्ञान-परक ग्रन्थ होने के साथ-साथ इसमें भक्ति और कर्म की आवश्यकता पर बल दिया गया है। सदाचार और सत्संग की महत्ता का भी स्थान-स्थान पर प्रतिपादन है।

- योग-वासिष्ठ में कुल लगभग 29 हजार (संस्कृत के) श्लोक हैं, जो निम्नलिखित छः प्रकरणों व 458 सर्गों में संयोजित हैं --

1. वैराग्य प्रकरण (33 सर्ग)
2. मुमुक्षु-व्यवहार प्रकरण (20 सर्ग),
3. उत्पत्ति प्रकरण (122 सर्ग)
4. स्थिति प्रकरण (62 सर्ग),
5. उपशम प्रकरण (93 सर्ग)
6. निर्वाण प्रकरण (पूर्वार्ध: 128 सर्ग और उत्तरार्ध: 216 सर्ग)

- योग-वासिष्ठ के महात्म्य का प्रतिपादन करते हुये इसके रचयिता महर्षि वाल्मीकि निम्नलिखित श्लोक में कहते हैं -- "मोक्ष प्राप्ति के लिये इस ग्रन्थ का श्रवण, मनन एवं ज्ञान प्राप्त कर लेने पर तप, ध्यान और जप आदि किसी साधन की आवश्यकता नहीं रहती।"

अस्मिंन्श्रुते मते ज्ञाते तपोध्यानजपादिकम् ।
मोक्षप्राप्तौ नरस्येह न किंचिदुपयुज्यते ॥२.१८.३४॥

-- योग-वासिष्ठ, मुमुक्षु-व्यवहार प्रकरण, सर्ग-18, श्लोक-34